بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA
Mob.9682536974.E-Mail :ansarullah@qadian.in KhulasaKhutba-29.09.2023 محلہ احمدیہ قادیان ۱۴۳۵۱۶ ضلع: گورداسپور (پنجاب)

बदर के युद्ध के संदर्भ में आँहज़रत सल्लल्लाह् अलैहि वसल्लम के जीवन चरित्र एवं ऐतिहासिक घटनाओं का ईमान वर्धक वर्णन।

सारांश ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 29 सितम्बर 2023, स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद यू. के.।

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ أَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- बदर की लड़ाई के बाद की घटनाओं का वर्णन हो रहा था। इन घटनाओं से जहाँ हमें आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सीरत एवं जीवन के वृत्तांतों का भी पता चलता है वहाँ यदि इतिहास पढ़ें तो कुछ ऐतिहासिक बातें भी पता चलती हैं तथा कुछ अनुचित रिवायतें भी चिन्हित होती हैं जिन्होंने इस्लाम का अनुचित रूप ग़ैरों के सामने पेश किया तथा इस्लाम विरोधी तत्व इससे इस्लाम को बदनाम करने का लाभ उठाते हैं तथा जो कट्टर पंथी मुसलमान हैं वे अपने उद्देश्यों को पूरा करने का लक्ष्य प्राप्त करते हैं।

आज जो वृत्तांत मैं बयान करूँगा उनमें पहली घटना उमैर बिन वहब की है जो युद्ध के बाद अपनी तथा मुशरिकों की असफलता का बदला लेने तथा आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हत्या के लिए मक्का से मदीने आया था परन्तु वहाँ अल्लाह तआला की तक़दीर ने कुछ और काम किया तथा उसे इस्लाम क़बूल करने की तौफ़ीक़ प्रदान की। इसके विवरण में लिखा है कि बदर के क़ैदियों में उमैर बिन वहब तथा सफ़वान बिन उमय्या हतीम (कअबा के निकट अर्धवत्ताकार दीवार) के पास बैठे बदर के युद्ध में पराज्य तथा क़ुरैश के सरदारों के विनाश के सम्बंध में बातें कर रहे थे। उमैर ने कहा कि यदि मुझ पर एक आदमी का ऋण न होता तथा मुझे अपने बाद अपने बीवी बच्चों की चिंता न होती तो मैं मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का वध कर देता, क्यूँकि मेरे वहाँ पहुंचने का कारण भी मौजूद है कि मेरा बेटा उनके हाथों में क़ैद है। यह सुनते ही सफ़वान ने दोनों काम अपने ज़िम्मे ले लिए तथा कहा कि तुम मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की, नऊज़ुबिल्लाह, हत्या कर दो। उमैर ने सफ़वान से कहा कि मेरे तथा तुम्हारे बीच यह जो मामला हुआ है, इसको गुप्त रखना। सफ़वान ने वादा कर लिया। उमैर ने अपनी तलवार पर धार लगाई, उसको विष में बुझाया तथा

उसके बाद मक्का से रवाना होकर मदीना पहुंचा। मदीने पहुंच कर मस्जिद नबवी के पास अपनी ऊँटनी को बिठाया तो हज़रत उमर रज़ी. ने देख कर फ़रमाया- यह ख़ुदा का दुशमन अवश्य किसी बुरे इरादे से आया है। हज़रत उमर रज़ी. हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुए तथा निवेदन किया कि पैग़म्बरे ख़ुदा! उमैर बिन वहब नंगी तलवार ले कर आया है। आप स. ने फ़रमाया- उसे मेरे पास ले आओ। हज़रत उमर रज़ी. उसे आपके पास ले आए।

उमैर ने जाहिलियत (क़ुर्आन के नाज़िल होने से पहले का युग) की प्रथानुसार आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सलाम किया। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया- ऐ उमैर! ख़ुदा ने हमें तुम्हारे इस जाहिलियत के सलाम से उत्तम सलाम सिखाया है। उमैर ने अपनी बात बयान करते हुए कहा कि मैं अपने बेटे के बारे में आया हूँ जो आप लोगों की क़ैद में है। हुज़ूर-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि फिर इस तलवार का औचत्य क्या है? परन्तु उमैर ने दोबारा यही कहा कि मैं अपने क़ैदी के विषय में बात करने आया हूँ। इस पर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया- नहीं, बल्कि तुम और सफ़वान बिन उमय्या एक दिन हतीम (कअबे के निकट एक स्थान) के पास बैठे बदर में मारे गए लोगों के बारे में बातें कर रहे थे। यह कह कर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन दोनों के बीच होने वाली पूरी बात चीत बयान फ़रमा दी। उमैर यह सब सुन कर चकित रह गया तथा तुरन्त इस्लाम क़बूल कर लिया। उमैर ने कहा कि जब हम दोनों ने यह बात की, तब वहाँ कोई तीसरा न था। अतः आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह बात सिवाए अल्लाह के किसी ने नहीं बताई। फिर उमैर ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मक्का वापस जाने तथा मक्का वालों को इस्लाम की दावत देने की आज्ञा चाही जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने प्रदान कर दी।

दूसरी ओर सफ़वान मक्का में हर एक को यह कहता कि जल्दी ही मैं तुम्हें एक शुभ सूचना सुनाऊँगा कि तुम बदर के युद्ध का शोक भूल जाओगे। वह हर आने वाले से उमैर की गतिविधियों के बारे में पूछा करता। अन्ततः एक दिन उसे उमैर के इस्लाम क़बूल करने की सूचना मिल गई। जब उमैर मक्का पहुंचे तो वे सीधे अपने घर गए तथा अपने परिवार को इस्लाम की दावत दी। फिर सफ़वान के पास गए तथा उसे इस्लाम की सच्चाई पर अवगत किया। सफ़वान ने उमैर की बातों का कोई जवाब दिया, न उनकी ओर ध्यान दिया।

बदर के बाद कुछ लोग मुसलमान हुए किन्तु वे पाखंड के रंग में थे। उनमें अब्दुल्लाह बिन अबी सलूल भी था। यह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आगमन से पहले ओस तथा ख़िज़रज नामक दोनों क़बीलों का सरदार बनने वाला था परन्तु हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आने के बाद यह सम्भव न हो सका। अतः यह इस्लाम के विरुद्ध गुप्त षड्यन्त्र करने लगा।

बदर से वापसी पर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सूचना मिली कि बनू सलीम तथा बनू ग़तफ़ान के लोग मदीने पर हमले की तय्यारी कर रहे हैं। यह सूचना मिलते ही आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बनू सलीम और बनू ग़तफ़ान की ओर बढ़ने का इरादा फ़रमाया तथा तीन सौ सहाबा किराम क साथ आप रवाना हो गए। जब बनू सलीम तथा बनू ग़तफ़ान को मुसलमानों की इस अचानक आगमन की सूचना मिली तो वे भयभीत हो गए तथा भाग कर पहाड़ की चोटियों पर जा छिपे। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम तथा सहाबा किराम कुछ दिन वहाँ ठहरे रहे तथा इसी बीच किसी को आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विरोध में आने का साहस न हुआ। चूँकि ये लोग युद्ध के निश्चय से आए हुए थे इस लिए उस समय की प्रथा के अनुसार उनकी सम्पदा पर क़बज़ा करना वैध था। अतः एक रिवायत के अनुसार उस युद्ध में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को माले ग़नीमत (युद्ध की विजय में हाथ आई सम्पत्ति) में पाँच सौ ऊँट मिले थे। उस अभयान के बारे में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पन्द्रह दिन मदीने से बाहर रहे।

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हिजरत के बाद शव्वाल 2 हिजरी में ख़ुदा तआला के आदेशानुसार मुसलमानों की पहली ईदुलफ़ित्र मनाई। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दोनों ईदों के विषय में सहाबियों से फ़रमाया कि इन दिनों में कोई व्यक्ति रोज़े न रखे, बल्कि खाए पिए तथा ख़ुशियाँ मनाए। दोनों ईदों पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पूर्वी दिशा में स्थित ईदगाह में तशरीफ़ ले जाते।

हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ीयल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं- इस्लाम की ईदें अपने अन्दर एक अद्‌भुत आभा रखती हैं तथा उनसे इस्लाम की वास्तविकता पर बड़ी रोशनी पड़ती है तथा यह अनुमान लगाने का अवसर मिलता है कि किस प्रकार इस्लाम मुसलमानों के हर एक कार्य को अल्लाह की स्तुति के साथ सम्बद्ध करना चाहता है।

बदर की लड़ाई के बाद तथा ओहद के युद्ध से पहले दो संदिग्‌ध घटनाओं का वर्णन भी मिलता है जिनका यदि थोड़ा सा अवलोकन भी किया जाए तो स्पष्ट हो जाता है कि मनघड़त कहानी है।

पहली घटना एक यहूदी महिला असमा पुत्री मरवान की हत्या की ह अर्थात उसके बारे में कहा जाता है कि उसकी हत्या की गई। उसके विवरण में लिखा है कि हज़रत उमैर बिन अदी एक नेत्रहीन व्यक्ति थे। रमाज़ान 2 हिजरी के अन्तिम दिन थे कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उमैर बिन अदी रज़ी. को असमा पुत्री मरवान की ओर भेजा जो यहूदी महिला थी, और यह बयान किया जाता है कि इस लिए भेजा कि इस्लाम को गालियाँ दिया करती थी और आप स. के विरुद्ध लोगों को उभारती थी तथा कविता कहती थी। हज़रत उमैर रज़ी. रात के अंधेरे में उसक घर में दाख़िल हुए। उस महिला के आस पास उसके बच्चे सो रहे थे तथा वह अपने एक बच्चे को दूध पिला रही थी। उमैर ने उसकी छाती पर तलवार रखी तथा उसकी हत्या कर दी। फिर उमैर ने वापस आकर फ़जर की नमाज़ आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पीछे अदा की तथा आप स. के पूछने पर बताया कि उन्होंने असमा पुत्री मरवान का वध कर दिया है।

एक रिवायत के अनुसार जब उमैर बिन अदी ने असमा पुत्री मरवान का वध किया तो इस आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबियों से फ़रमाया कि यदि तुम ऐसे व्यक्ति की ओर देखना चाहो जिसने अल्लाह और उसके रसूल की सहायता की है तो उमैर बिन अदी की ओर देख लो। इस्तीआब नामक पुस्तक में उमैर बिन अदी के हालात के अंतर्गत लिखा है कि उन्होंने अपनो बहिन को भी मार दिया था, क्यूँकि वह आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को गालियाँ दिया करती थी।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि इतिहास एवं सीरत की कुछ किताबों में यह घटना मिलती है परन्तु सहा सित्ता तथा हदीस की किसी भी प्रमाणित पुस्तक में इसका वर्णन नहीं है। मूल बात यह है कि बाद के ज़माने के

कुछ लोगों ने इस प्रकार की फ़र्ज़ी एवं मनघड़त कहानियों को न केवल अपनी किताबों में स्थान दिया है अपितु रिसालत के अपमान के प्रावधान में इसको पेश किया है।

आजकल के मुल्लां ऐसी घटनाओं को लेकर दलील देते हैं कि जो रिसालत का अपमान करे उसकी हत्या कर दो। जबकि रिसालत के अपमान में किसी प्रकार का कोई दंड इस्लाम में मौजूद नहीं है तथा न ही इस प्रकार की घटनाओं का कोई यथार्थ है। उदाहरणतः यदि इस हदीस का आलोचनात्मक अध्ययन किया जाए तो पता चलता है कि प्रमाण की दृष्टि से यह रिवायत ज़ईफ़ (कमज़ोर) है बल्कि इसे मौजूअ (मनघड़त) भी कहा गया है। इसका एक बयान करने वाला मुहम्मद बिन उमर वाक़दी है जो झूठा है। घटनाक्रम की दृष्टि से भी इस कहानी पर अनेक सवाल उठते हैं उदाहरणतः सहाबी नेत्रहीन होने के बावजूद भी उस महिला के घर कैसे पहुंचे? महिला को रात के अंधेरे में कैसे ढूंड निकाला? यदि टटोल टटोल कर पहचाना तो उसक बावजूद भी कोई न जागा। टटोल टटोल कर यह भी अनुमान लगा लिया कि वह महिला बच्चे को दूध पिला रही है। फिर यह कि हताहत होने वाली महिला ने मौत को सामने देख कर भी एक नेत्रहीन से अपने बचाव अथवा संघर्ष का प्रयास न किया। महिला की आँखें थीं तब भी उसने शोर मचाया, न कोई संघर्ष किया। उस महिला का पति वहाँ सो रहा था, उसको भी कुछ पता नहीं चला। तथा सबसे बढ़ कर यह कि सामान्यतः नेत्रहीन व्यक्ति आवाज़ों से पहचानते हैं, नेत्रहीन सहाबी को कोई आवाज़ दिए बिन कैसे पता चल गया कि वह महिला असमा पुत्री मरवान ही थी। दूसरी रिवायत में यह भी है कि वह महिला जब खजूर लेने अन्दर गई तथा खजूरें उठाने के लिए झुकी, वे (नेत्रहीन) कहते हैं कि मैंने दाएँ बाएँ देखा, मैंने उसके सिर पर वार किया तथा उसकी हत्या कर दी।

हुज़ूर ने बयान फ़रमाया कि इसके अतिरिक्त अधिकांश रिवायतों में महिला के नाम, हत्यारे का नाम, हत्या के समय तथा फिर उनमें वर्णित घटना के स्वरूप में भी मतभेद है जा इस घटना को असत्य एवं मनघड़त होना साबित करती हैं।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि कट्टर पंथी मुल्ला ने इस प्रकार की मनघड़त घटनाओं को महत्त्व देकर इस्लाम की सुन्दर शिक्षा को बदनाम किया है तथा ये मुल्लां आजकल इसी तरह की मनघड़त कहानियाँ बनाकर अहमदियों के विरुद्ध भी कट्टरता को व्यक्त करते हैं तथा लोगों को भड़काते रहते हैं।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि दूसरी घटना भी इसी से मिलती जुलती है और वह इन्शाअल्लाह आगे बयान करूँगा।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا
مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ
وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ
يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔